मेसन रेमी और उनके अनुयायी
29 नवम्बर, 2001 को पुनरावलोकित

परिचय

संविदा के अतिक्रमण के स्वरूप और खतरों का विवरण देने के अतिरिक्त शोगी एफेन्दी ने कई बार उन व्यक्तियों तथा समूहों के नियति की भी संक्षेप में समीक्षा की, जो इस निकृष्टतम मानवीय भूल के वशीभूत हो गये थे। उन्होंने बताया कि जो व्यक्ति प्रभुधर्म की एकता को क्षति पहुँचाने का प्रयास करते है।, उनके द्वारा भुगते परिणामों पर विचार करने से अनुयायियों को बहाउल्लाह की संविदा की सुरक्षा की शक्ति को अधिक गहराई से समझने में सहायता मिलती है। उन चार दशकों से अधिक समय के परिपेक्ष्य में, जो चार्ल्स मेसन रेमी के संविदा के अतिक्रमण काल के पश्चात गुजरे हैं, उन व्यक्तियों के हश्र की समीक्षा करना शिक्षाप्रद है, जिन्होंने इस निष्फल मार्ग पर उसका अनुसरण किया।

संविदा भंजन

संविदा भंजन का स्वरूप

संविदा भंजन क्या है ? एक व्यक्ति को 23 मार्च 1975 को लिखे गए पत्र में विश्व न्याय मंदिर ने लिखा :

जब कोई व्यक्ति ईश्वरावतार के रूप में बहाउल्लाह की स्वीकृति की घोषणा करता है, तो वह संविदा का एक पक्ष बन जाता है और उनके धर्मप्रवर्तन की समग्रता को स्वीकार करता है। इसके बाद अगर वह पीठ फेरता है और बहाउल्लाह अथवा प्रभुधर्म की केन्द्रीय संस्था पर हमला करता है, तो वह व्यक्ति संविदा का उल्लंघन करता है। ऐसा होने पर उस व्यक्ति को उसके कार्यों की अतर्क संगति और भूल दिखलाने में पूरी सहायता की जाती है। फिर भी यदि वह दुराग्रह करता है, तो स्वयं बहाउल्लाह द्वारा प्रदत्त निर्देश के अनुसार, संविदा भंजक के रूप में उसका परित्याग अवश्य कर देना चाहिये।

संविदा का अतिक्रमण करने वाले लोगों की निजी त्रुटियों को, जिनके वशीभूत हो जाने को वे जानते हैं, प्रिय धर्मसंरक्षक ने "अंधघृणा, असीम धृष्टता, अविश्वसनीय मूढ़ता, अधम विश्वासघात, छॅलागे मारती महत्वाकांक्षा" कहा है। ये संबधित व्यक्तियों को भिन्न–भिन्न मात्राओं में आक्रान्त करते हैं। हो सकता है इनमें कुछ लोगों को दूसरों द्वारा मूर्ख बनाया गया है। उनके बारे में अब्दुल–बहा ने कहा है –

ये संविदा की वैधता में संदेह नहीं करते हैं, लेकिन उनके स्वार्थलोलुप उद्देश्य उन्हें इस दशा में खींच लाते हैं। ऐसा नहीं है जो कुछ वे कर रहे हैं उसे जानते नहीं हैं – वे पूरी तरह से जानते हैं, फिर भी वे विरोध ा दर्शाते है।

इसमें सन्निहित खतरा

मास्टर ने चेतावनी दी है कि संविदाभंजन को अगर रोका न जाये तो वह "प्रभुधर्म का पूर्णतया विनाश कर देगा, उसका विधान मिटा देगा और अतीत में किये गये सारे प्रयासों पर पानी फेर देगा।" यह चेतावनी वह इस तथ्य के संदर्भ में प्रस्तुत करते हैं कि बहाउल्लाह के धर्म का प्रमुख उद्देश्य एकता उत्पन्न करना है :

यदि संविदा की सुरक्षाकारी शक्ति प्रभुधर्म के अभेद्य दुर्ग की रक्षा के लिए न हो, तो बहाईयों के बीच एक ही दिन में एक हजार विभिन्न सम्प्रदाय बन जायेंगे, जैसाकि पूर्व कालों में हुआ है।

संविदाभंजन से प्रभुधर्म के विकास के लिए उत्पन्न संकटों के अतिरिक्त, मानव अहंकार को सूक्ष्मता से पनपने के कारण, वह वैयक्तिक अनुयायी के स्वास्थ्य के लिए संकटकारी एक आध्यात्मिक छूत की बीमारी प्रस्तुत करती है। अब्दुलबहा ने संविदाभंजन के रोगाणु से ग्रस्त पाये गये किसी व्यक्ति के बहाई समुदाय से पूर्णतः बहिष्कार का आह्वान किया और संलिप्त व्यक्तियों के साथ किसी प्रकार का संपर्क न रखने का अनुयायियों से आग्रह किया।

संबद्ध व्यक्तियों पर प्रभाव

प्रभुधर्म के विकास की समीक्षा करते हुए धर्म संरक्षक ने कई बार उदाहरण प्रस्तुत किए कि किस प्रकार ये "बहके हुए, स्वार्थलोलुप दुस्साहसियों द्वारा प्रवर्तित आन्दोलन अपने प्रवर्तकों के कुचक्रों में फंस जाते हैं, और लज्जा में गढ़कर अन्ततः पूर्ण विस्मृति में डूब जाते हैं।" आगे कहते हैं :

इनमें से कुछ शत्रुओं द्वारा अस्थिर रूप से उत्पन्न प्रभाव का लोप, दूसरों के सौभाग्य में प्रारम्भ हुआ पतन, कुछ अन्य व्यक्तियों द्वारा व्यक्त सच्चा पश्चाताप और तत्पश्चात उनकी बहाली तथा प्रभुधर्म की शिक्षण एवं प्रशासनिक गतिविधियों की सफल प्रतिभागिता, अपने आप में उस अजेय शक्ति और अदम्य चेतना के पर्याप्त प्रमाण हैं, जो उनको अनुप्रमाणित करती हैं, जो अब्दुलबहा के इच्छापत्र तथा वसीयत के साथ तादात्म्य रखकर खड़े हैं, और संनिष्ठापूर्वक उसके प्रावधानों एवं आज्ञाओं का निर्वाह करते हैं।

एक स्वच्छकारी प्रक्रिया

संयुक्त राज्य के संविदाभंजकों के एक दल के सम्बन्ध में, जो बाद में दो व्यक्तियों, जिन्होंने उसका गठन किया था, की मृत्यु के साथ बिखर कर लुप्त हो गया, शोगी एफेन्दी ने लिखा :

वह फूट, जिसे उनके मूर्ख नेताओं ने बड़े परिश्रम से प्रभुधर्म के अन्दर उत्पन्न करने का उपाय रचा था, शीध्र ही, उन्हें देखकर घोर आश्चर्य होगा कि विशुद्धिकरण की एक प्रक्रिया एक स्वच्छकारी साधन बनकर सामने आएगी। प्रभुधर्म के विभाजन का यह प्रयास उसके अनुयायियों का पतन करना, तो दूर उसकी अक्षय एकता को संबलित करती है और एक अंशवादी या उदासीन दुनिया के समक्ष नये सिरे से प्रभुधर्म की संस्थाओं की असंजनकारी शक्ति उसके उद्देश्यों तथा सिद्धान्तों की अविनाशिता, और उसके सामुदायिक जीवन में निहित बलवर्द्धक शक्तियों का उद्घोष करती है।

मेसन रेमी की धर्मच्यूति

धर्मसंरक्षक पद के संबंध में धर्मभुजाओं की घोषणा

04 नवम्बर 1957 की शाम को जब धर्मसंरक्षक के दिवंगत होने का समाचार बहाई केन्द्र पहुँचा, तो शोगी एफेन्दी के कक्ष में तुरन्त ताला डालकर पहरा बिठा दिया गया, ताकि प्रभुधर्म की भुजाओं के पवित्र भूमि में एकत्र होने तक कोई उसमें प्रवेश न कर सके। धर्मसंरक्षक की अन्तिम क्रिया सम्पन्न होने के बाद शीघ्र ही धर्मभुजाएँ पवित्र भूमि में एकत्र हुए।

अब्दुलबहा के इच्छापत्र तथा वसीयत में सुस्पष्ट रूप से बताया गया है कि धर्मसंरक्षक द्वारा अपने उत्तराधिकारी की नियुक्ति किस प्रकार की जाएगी :

वह (शोगी एफेन्दी) ईश्वरीय शब्दों के व्याख्याता हैं और उनके बाद उनके वंशजों में प्रथम जन्मी सन्तान उनका स्थान लेगी ....

ओ प्रभु के प्रियजनों! प्रभुधर्म के संरक्षक के लिए यह आवश्यक है कि वह अपने जीवनकाल में उसको नियुक्त कर दें, जो उनका उत्तराधिकारी बनेगा, जिससे उसके निधन के बाद मतभेद न उत्पन्न हो। जिसकी नियुक्ति हो, वह अवश्य ही सभी लौकिक वस्तुओं से विरक्ति प्रकट करें, विशुद्धता का सार हो और ईश्वर का भय, ज्ञान, विवेक तथा विद्वता दर्शायें। इस प्रकार, यदि धर्मसंरक्षक की प्रथम संतान इन शब्दों की सत्यता का प्रकट स्वरूप न हो कि "बच्चा अपने पूर्वज का गुप्त सार तत्व होता है" अर्थात वह यदि उनके (धर्मसंरक्षक) अन्दर के आध्यात्मिक तत्व को वंश परम्परा से प्राप्त न करे और उनके यशस्वी वंशक्रम का सच्चरित्रता से मेल न हो, तो वह (धर्मसंरक्षक) किसी अन्य शाखा को अपना उत्तराधिकारी चुनें।

धर्मभुजाएँ अपने बीच में से नौ व्यक्तियों को चुनेगी...। इन नौ का चुनाव धर्मभुजाओं में से सर्वसम्मति या बहुमत से किया जाएगा और ये सर्वसम्मति से या बहुमत के द्वारा उस व्यक्ति के चयन को अपनी स्वीकृति प्रदान करेंगे, जिसे धर्मसंरक्षक ने अपना उत्तराधिकारी चुना है।

जैसे ही 27 धर्मभुजाओं में से 26 पवित्र भूमि में एकत्र हुए (श्रीमती कॉरीन ट्रू ने, जो अपनी वृद्धावस्था तथा स्वास्थ्य के कारण नहीं आ सकीं, अंततः शपथपत्रों पर हस्ताक्षर करके अपनी सह–भुजाओं द्वारा की गई, विभिन्न कार्यवाहियों के प्रति अपना समर्थन व्यक्त किया), उन्होंने अपने बीच से नौ व्यक्तियों को धर्मसंरक्षक के कक्ष के प्रवेश करके कोई दस्तावेज खोजने के लिए नामित किया, जिसे यह संभवतः अपने पीछे छोड़ गये हों। उनकी सूचना मिलने के बाद, चार्ल्स मेसन रेमी सहित सभी भुजाओं ने एक प्रपत्र पर हस्ताक्षर किये, जिसमें कहा गया था कि शोगी एफेन्दी का "अपना कोई उत्तराधिकारी नियुक्त किए बगैर....."परलोकवास हो गया है।

उस समय बहजी में एकत्रित धर्मभुजाओं की पहली बैठक के बाद एक घोषणापत्र जारी किया गया। "पूर्व और पश्चिम के बहाईयों को" सम्बोधित इस प्रपत्र में यह घोषणा की गई थी कि चूंकि "सभी अगसान (शाखाएँ) या तो दिवंगत हो चुके हैं या धर्मसंरक्षक द्वारा संविदा के अतिक्रामक घोषित किये गये हैं" अतः यह स्पष्ट है कि "शोगी एफेन्दी द्वारा अपना कोई उत्तराधिकारी नियुक्त नहीं किया जा सकता था।" अनुयायियों का धर्मसंरक्षक के दस वर्षीय धर्मसमर को पूरा करने के लिए एकजुट होने का आह्वान करते हुए भुजाओं ने बताया कि समुचित समयान्तराल में, बहाई विश्व "विश्व न्याय मंदिर अर्थात उस सर्वोच्च निकाय" का चुनाव करेगा "जिसे , जैसा कि मास्टर की वसीयत हमें आश्वासन देती है, दिव्य अचूकता प्रदत्त है :

...विश्व केन्द्र के नौ धर्मभुजाओं द्वारा एकत्रित धर्मभुजाओं की पूर्ण संस्था निर्णय लेगी कि कब व कैसे अंतर्राष्ट्रीय बहाई परिषद किस प्रकार संरक्षक द्वारा बताये गये सतत स्तरों से गुजकर राष्ट्रीय सभाओं द्वारा चुने जाने वाले विश्व न्याय मंदिर के चुनाव के आह्वान में परिणित होगी।

जब वह दिव्यतः निर्दिष्ट निकाय अस्तित्व ग्रहण करे, प्रभुधर्म का सभी दशाओं की नए सिरे से जांच की सकती है, और उसके भावी संचालन के लिए आवश्यक उपागम्य धर्मभुजाओं के साथ परामर्श में निर्धारित किए जा सकते हैं।

मेसन रेमी ने पुनः अपनी सह–भुजाओं के साथ सम्मलित होकर इस द्वितीय औपचारिक वक्तव्य पर हस्ताक्षर किये प्रभुधर्म के संरक्षक शोगी एफेन्दी का कोई उत्तराधिकारी नहीं था। संरक्षक के देहावसान के दो वर्ष पश्चात तक भी मैसन रेमी धर्मभुजाओं के विचार विमर्श में और उन सभी कार्यों में स्वयं सम्मिलित तथा

सहमत थे जो विश्व न्याय मंदिर के चुनाव के पूर्व को धर्म को दिशा देने के उत्तरदायित्व निभाने में धर्मभुजाओं ने किये थे।

मेसन रेमी का निष्कासन

1957 में अपनी इस लिखित अभिपुष्टियों के बावजूद कि शोगी एफेन्दी ने अपना कोई उत्तराधिकारी नियुक्त नहीं किया था और किसी को नियुक्त कर भी नहीं सकते थे, रेमी ने अप्रैल 1960 में एक "घोषणापत्र" अपने लिए इस पद का दावा प्रस्तुत किया और घोषित किया कि वह "द्वितीय धर्मसंरक्षक" है। यह मिथ्या दावा इस तथ्य पर आधारित था कि उसे मनोनीत अन्तर्राष्ट्रीय बहाई परिषद का अध्यक्ष नामित किया गया था। इस प्रकार प्रभुधर्म पर कब्जा करने की अपनी कोशिश से बाज आने से जब उसने इंकार कर दिया, तो प्रभुधर्म की भुजाओं ने संविदा के अतिक्रमणकारी के रूप में उसे प्रभुधर्म से निष्कासित कर दिया।

इसके बाद शीध्र ही यूरोप, संयुक्तराज्य और अन्य स्थानों के कुछ अनुयायियों को, जिन्होंने उसके दावे को स्वीकार किया था, इसी प्रकार प्रभुधर्म से निष्कासित किया गया। इसमें जॉन कैर, डोनाल्ड हार्वे, जोएल मरान्गेला, रेगीनाल्ड किंग और लीलैण्ड जेन्सन थे। इन सभी ने बाद में विरोधों की एक श्रंखला भड़काने में बड़ी भूमिकाएं निभायी, जो रेमी के शेष बचे हुए निराश अनुयायियों को विभाजित करने के लिये उत्पन्न किये गये थे।

मेसन रेमी की मृत्यु

अप्रैल 1974 में विश्व न्याय मंदिर ने बहाई जगत को यह संदेश दिया :

चार्ल्स मेसन रेमी का, जिसका शोगी एफेन्दी के देहावसान के पश्चात धर्मसंरक्षक पद को हड़पने के उद्धत प्रयास के कारण निष्ठावानों के सैन्यदल से निष्कासन हुआ, फलोसेंस, इटली में अपने जीवन के सौवें वर्ष में निधन हो गया है। अन्निष्ठ अनुयायियों द्वारा परित्यक्त मेसन रेमी को धार्मिक अनुष्ठानों के बगैर दफनाया गया। एक ऐसे व्यक्ति की दयनीय धर्मच्युति के माध्यम से, जिसे मास्टर और धर्मसंरक्षक दोनों से महत् सम्मान प्राप्त हुए थे, इतिहास बहाउल्लाह के धर्म की अपराजेय संविदा को क्षति पहुॅंचाने के सभी प्रयासों की निरर्थकता का एक और उदाहरण प्रस्तुत करता है।

रेमी के अनुयायियों में विभाजन

धर्मसंरक्षकत्व के अन्तर्गत... राष्ट्रीय आध्यात्मिक सभा"

रेमी की धर्मच्युति का आधार लेकर, अपने को "धर्मसंरक्षकत्व के अन्तर्गत बहाई" कहने वाले संयुक्त राज्य का एक समूह न्यू मैक्सिको में 1961–62 और अप्रैल 1963 में एकत्र हुआ। उन्होंने एक सभा का गठन किया जिसे "वंशानुगत धर्मसंरक्षकत्व के अंतर्गत संयुक्त राज्य के बहाई की राष्ट्रीय आध्यात्मिक सभा" कहा। उसी महीने पाकिस्तान में एक समूह ने ऐसा ही एक निकाय बनाया, लेकिन वह जल्दी ही टूट गया।

न्यू मैक्सिको समूह ने मार्च 1964 में अपने को संस्थापित किया और संयुक्त राज्य के बहाइयों की राष्ट्रीय आध्यात्मिक सभा के विरूद्ध एक कानूनी वाद दायर करते हुए विलमेट मंदिर संपत्ति का वैद्य अधिकारी होने के साथ संयुक्त राज्य में बहाई धर्म की आधिकारिक आवाज के प्रतिनिधि होने का दावा किया। वैध राष्ट्रीय आध्यात्मिक सभा ने ट्रेडमार्का अतिक्रमण का एक जबावी दावा इस समूह के विरूद्ध दाखिल किया, और बाद में उनको स्थापित बहाई शब्दावली के प्रयोग या अन्य प्रकार से नागरिक कानून के अंतर्गत राष्ट्रीय सभा के अधिकारों का उल्लंघन से अपवर्जित करती एक निषेधाज्ञा प्राप्त कर ली।

न्यू मैक्सिको समूह जब दूसरे मुकदमे की तैयारी कर रहा था, रेमी ने उनको अचानक निर्देश दिया कि वे "परिणामों की चिन्ता न करके" कार्यवाही रोक दें। इसके बाद शीध्र ही रेमी ने सान्ता डी समूह की राष्ट्रीय सभा को भंग किए जाने का आदेश दिया।

रेमी की "द्वितीय अंर्तराष्ट्रीय बहाई परिषद"

रेमी ने 1964 में "द्वितीय अन्तर्राष्ट्रीय बहाई परिषद्" नामक एक संगठन खड़ा किया। इस निकाय के अध्यक्ष पद पर फ्रांस में रह रहे एक अनुयायी जोएल मरान्गेला की नियुक्ति की गई। यह व्यक्ति रेमी का आरंभ से समर्थक रहा था और धर्मभुजाओं द्वारा 03 अगस्त 1960 को प्रभुधर्म से निष्कासित किया गया था। रेमी ने क्योंकि शोगी एफेंदी निर्मित अन्तर्राष्ट्रीय बहाई परिषद के अध्यक्ष होने की हैसियत पर धर्मसंरक्षक के अपने दावे को आधारित करने का प्रयास किया था, अतः उसकी यह कार्यवाही रेमी के अनुयायियों में मरान्गेला को अग्रणी स्थिति प्रदान करती सामने आई।

स्पष्ट था कि संविदाभंजकों की मण्डली में गंभीर प्रतिद्वंदताएं पनप रही थी। यह इस तथ्य से जाहिर है कि 18 अक्टूबर 1966 को रेमी ने यह "परिषद" एकाएक भंग कर दी, और उसके पूर्व अध्यक्ष मरान्गेला को "तुम्हारे पास मौजूद द्वितीय परिषद" जिसका अब अस्तित्व नहीं है के सारे अभिलेख मुझे सौंप देने का", आदेश दिया। इस कार्यवाही का, जिसने मरान्गेला को उसकी अग्रणी भूमिका से वंचित कर दिया, प्रत्यक्ष प्रभाव यह हुआ कि समूह में उठे मतभेद शांत होने के बजाय और बढ़ गये। 29 जनवरी 1967 को रेमी ने उलाहना दिया कि "कुछ मित्रों ने यह सूचना फैलाना आरम्भ किया है कि धर्मसंरक्षक का मस्तिष्क असंयत हो रहा है, और कोई उस पर नियंत्रण कर रहा है....।

डोनालड हार्वे की नियुक्ति

15 जनवरी 1967 को रेमी ने अपनी मृत्यु के बाद अपने एक अनुयायी डोनाल्ड हार्वे को, उसका स्थान लेने के लिए "प्रभुधर्म का तीसरा धर्मसंरक्षक" नियुक्त किया। अमेरिकी बहाई हार्वे भी धर्मच्युति के समय फ्रांस में रह रहा था और संविदाभंजकों के पहले समूह में सम्मिलित था। अगले वर्ष रेमी ने एक भावी "चौबीस बड़ों में पॉच की नियुक्ति की, जिनको हार्वे के सहयोग से "बहाउल्लाह के धर्म का प्रशासन संभालना" था। किन्तु रेमी ने अन्ततः बड़ों का निकाय भी पूर्व संगठनों की भांति वचनदत्त नियुक्तियॉ पूरी किए बगैर भंग कर दिया।

हार्वे रेमी का मनोनीत उत्तराधिकारी बना रहा, लेकिन उसने रेमी की मृत्यु के पहले या पश्चात उसे प्रदत्त अधिकारों का उपयोग करने के लिए कोई कार्यवाही नहीं की। 1991 में हार्वे की मृत्यु हो गई। संगठन में किसी अभिरूचि का दावा न करते हुए उसके विभिन्न पत्र कहते हैं कि धार्मिक आस्था विशुद्ध रूप से व्यक्तिगत विषय है।

हार्वे के एक साथी, जैक्स शोगमोनियन ने हार्वे द्वारा 17 नवंबर 84 को हस्ताक्षरित एक तथाकथित पत्र प्रस्तुत किया जिसमें एक कथन था "(मैं) श्री जॅक्स शोगमोनियन को नियुक्त तथा पदस्थापित करता हूँ ....विश्व धर्म तथा बहाउल्लाह के प्रकटीकरण के चौथे संरक्षक के रूप में।" 1960 में रेमी के मूल समूह का सदस्य जिसे दूसरों के साथ निष्कासित कर दिया गया था, शोगमोनियन को अनुयायियों को आकर्षित करने में बहुत कम सफलता मिली।

जोएल मरान्गेला का दावा

अचानक 12 नवम्बर 1969 को मरान्गेला ने घोषणा की कि हार्वे के बजाय वह रेमी का विधिसम्मत उत्तराधिकारी माना जाए। मरान्गेला के अनुसार, रेमी ने कई वर्ष पूर्व (दिसम्बर 1961) उसे इस विवरणात्मक टिप्पणी के साथ एक मुहरबंद पत्र भेजा था कि मरान्गेला जान लेगा कि मुहर को कब तोड़ा जाना है। मरान्गेला ने बताया कि "द्वितीय अंतर्राष्ट्रीय परिषद" के अध्यक्ष पद पर अपनी नियुक्ति के शीध्र पश्चात उसने यह लिफाफा खोला था। इसमें रेमी के हस्ताक्षरयुक्त एक संक्षिप्त सूचना थी, जिसमें उसे निर्देश दिया गया था कि "बहाई जगत को बता दो कि मैं तुम्हें बहाई धर्म का तीसरा संरक्षक नियुक्त करता हूँ।" तथापि इस निर्देश पर मरान्गेला ने अभी तक कोई कदम नहीं उठाया था।

अपने उत्तराधिकारी के रूप में हार्वे की रेमी कृत नियुक्ति की अवहेलना के लिए मरान्गेला ने वह सफाई दी कि रेमी कथित रूप से असंगत आचरण दर्शा रहा था। इस समय तक रेमी ने यह कहते हुए शोगी एफेन्दी पर हमला करना शुरू कर दिया था कि प्रशासनिक व्यवस्था केवल "बाबी धर्म" के संगठनीकरण को निरूपित करती है और उसे "विघटित" कर दिया जाना चाहिए। इस प्रकार रेमी ने अब अपने आप को बहाई धर्म का "प्रथम" संरक्षक मान लिया था।

अपनी घोषणा के बाद मरान्गेला ने एक संस्था खड़ी करने का उपक्रम किया, जिसे उसने "प्रमाणित बहाई धर्म का राष्ट्रीय ब्यूरो" कहा। इसके बाद हार्वे और मरान्गेला दोनों ने रेमी के न्यायसंगत उत्तराधिकारी होने का दावा करते हुए एक दूसरे के दावों की अधिकतर अवहेलना की।

जॉन कैर की भूमिका

इस समय तक नेतृत्व के लिए संघर्ष करने वलों में कई अन्य अपने–अपने तथाकथित अधिकारों पर बल दे रहे थे। एक प्रतिभासम्पन्न लेखक जॉन कैर रेमी शुरूआती समर्थकों में रहा था और संविदाभंजकों के रूप में 1961 में निकाला गया था। रेमी के धर्मसंरक्षक पद के दावों को उसने मूलरूप से बढ़ावा दिया था और इस संबंध में अपने पास उपलब्ध बहाइयों के पतों पर उसने बहुत से पत्र भेजे थे। रेमी के बाद नेतृत्व का विवाद चूंकि खुलकर फूट पड़ा था, किन्तु कैर सहसा इस बेतुके विवाद और किसी जमशेद मानी के पूर्णतया असंबद्ध दावों का प्रवक्ता बनकर उभरा। इंडोनेशिया में ईरानी पायोनियर जमशेद मानी ने अपने आप को "वह व्यक्ति जो प्रतिक्षण संदेशवाहकों को उत्पन्न करता है" घोषित किया था।

मानी में जब मानसिक रूग्णता के लक्षण प्रकट होने लगे और तेहरान में उसे चिकित्सालय में भर्ती किया जाना आवश्यक हो गया, तो कैर ने भी इधर रूचि लेना त्याग दिया। बाद में "जान किस्टोफिल" के छद्म नाम से "हाउस आफ लाइट" और "हाउस आफ मेनकाइण्ड" सहित विभिन्न संगठनों के तथाकथित प्रवक्ता के रूप में लिखता दिखाई दिया। इस नई क्षमता में कैर ने अपना ध्यान "अनर्थकारी घटनाओं" के विषय पर केन्द्रित किया, जो शताब्दी के अन्त के पूर्व दिखाई देंगी और "तीसरे" ईश्वरावतार का मार्ग तैयार करेगी।

रेजीनाल्ड किंग का हस्तक्षेप

इसी बीच संयुक्त राज्य में दो और संविदाभंजक दल उभरे, जिन्होंने एक दूसरे की कटु निन्दा की। इनमें पहले का नेतृत्व रेजीनाल्ड (रेक्स) किंग कर रहा था, जो अल्पजीवी न्यू मैक्सिको "राष्ट्रीय सभा" का सचिव चुना गया था। रेमी ने इसे 1964 में भंग कर दिया था। संयुक्त राज्य में अपनी नेतृत्व भूमिका के रेमी प्रतिरोध से असंतुष्ट किंग ने अंततः इटली जाकर रेमी से उग्रतापूर्ण मुलाकात की। इस भिडन्त के बाद रेमी ने किंग की भर्त्सना करते हुए 13 सितम्बर 1969 को एक पत्र जारी किया : उसका स्थान सदा–सर्वदा और शाश्वत रूप स

शैतान का स्थान है। मरान्गोला ने जब दो महीने बाद अपने दावे प्रस्तुत किये, तो किंग ने उसके प्रति अपनी निष्ठा पलट ली।

शीध्र ही यह सम्बन्ध टूट गया। किंग ने तय किया कि मरान्गेला ने "लेखें की कई सदोष व्याख्यायें" की हैं। अतः उसने घोषणा की कि मरान्गेला "संरक्षक पद की अपेक्षाएं पूरी नहीं कर पाया है।" वस्तुतः उसने यह तर्क रखा कि मेसन रेमी या जाएल मरान्गेला कभी धर्म संरक्षक नहीं रहे हैं.... क्योंकि उनमें वंशक्रमानुगत उत्तराधिकार का अभाव है" (अर्थात बहाउल्लाह के)। इस उपक्रम में हार्वे की स्थिति की उपेक्षा की गई। किंग के अनुसार रेमी वास्तव में एक "प्रतिशासक" रहा था, और किंग ने अनुभूति की कि वह यथार्थ में द्वितीय प्रतिशासक है....।

इस दावे पर हार्वे और मरान्गेला ने अधिक ध्यान नहीं दिया, जितना कि उन्होंने एक–दूसरे या केरे के दावों पर दिया था। उसे अपने जिन अधिकारों का दावेदार होने का विश्वास था, उन्हें अपने ही परिजनों से बनी एक "परिषद" के लिए छोड़ कर वह 1 अप्रैल 1977 को परलोक सिधारा।

लीलैण्ड जेन्सन का प्रसंग

संयुक्त राज्य में रेमी के अनुयायियों के नेतृत्व के लिए किंग का लम्बा संघर्ष एक दूसरे दावेदार लीलैण्ड जेन्सन के समानान्तर था। दोनों के बीच विवाद 1963 में शुरू हुआ था, जब वे दोनों न्यू मैक्सिको वंशानुगत धर्मसंरक्षणत्व के अन्तर्गत..... राष्ट्रीय सभा के सदस्य थे। जेन्सन ने गिं पर संयुक्त राज्य समूह का नियन्त्रण हथियाने का आरोप लगाया था, और इस पर गिं ने जेन्सन को बहाई धर्म से निकाल बाहर करने के लिए एक बहाई अदालत की स्थापना का प्रस्ताव रखा था। रेमी द्वारा इस प्रस्ताव का प्रतिरोध किया जाना ही उसके प्रति किंग का मनमुटाव आरम्भ होने का कारण बना।

इस परिदृश्य में जेन्सन का उदय रेमी के अनुगत समूह के नैतिक चरित्र में एक और हृास का परिचायक है। रेमी द्वारा भविष्यवाणी की गई एक विनाशकारी बाढ़ से बचने के लिए 1964 में मिसूला, मोन्टान में बसने के बाद जेन्सन को 1969 में लम्पट और काकुम आचरण का अपराधी ठहराया गया और दण्डित कर मोन्टाना राज्य कारागार भेजा गया। वहॉ जेन्सन ने कई साथी बन्दियों को अपने दावे के पक्ष में मोड़ लिया था कि एक देवदूत तुल्य आगन्तुक ने उसे बता कि वह जौशुआ हैं। अपनी सजा काटने के बाद उसने रेमी के शेष अमेरिकी अनुयायियों को धार्मिक सत्य की अपनी अनोखी व्याख्याओं का परिचय देने के लिए सम्पूर्ण संयुक्त राज्य की यात्रा आरम्भ की। (उदाहरण के लिए जेन्सन ने दावा किया कि वह जोशुआ और ईसा की वापसी ही नहीं बल्कि भूणस्वरूप विश्व न्याय मंदिर भी है) रेमी की मृत्यु के पश्चात जेन्सन ने संविदा के प्रावधानों के अंतर्गत बहाई (बी यू पी सी) का समूह तैयार किया। 1991 में उसने द्वितीय अंतर्राष्ट्रीय बहाई परिषद का गठन किया।

इन गतिविधियों में मई 1980 में एक बड़ा गतिरोध आया, जब जेन्सन की विश्व के अन्त की व्यापक भविष्यवाणी इस घटना की तिथियॉ तीन बार(29 अप्रैल, 7 मई, 22–23 मई 1980) बदलने के बावजूद सत्य सिद्ध नहीं हुई। यद्यपि उसके कुछ घनिष्ट सहयोगियों और परिजनों ने उसे अपना समर्थन जारी रखा, किन्तु उसके अधिकांश अनुयायियों ने उसका परित्याग कर दिया। अगस्त 1996 में उसकी मृत्यु हो गई।

गियूसेपे पेपे को जोड़ने के प्रयास

इस दीर्ध तथा भ्रान्तिपूर्ण घटनाचक्र का संभवतः सबसे विचित्र प्रसंग एक ऐसे व्यक्ति पर केन्द्रित होना था, जो न तो बहाई धर्म सदस्य था और न जिसकी विभिन्न संविदाभंजकों की गतिविधियों में कोई भूमिका रही थीं फलोरेन्स, इटली के भ्रमण के समय रेमी का परिचय गियूसेपे पेपे नामक व्यक्ति से हुआ । रेमी जब अपने निष्कासन के बाद फलोरेन्स में जाकर रहा, तो इस युवक ने उसके सचिव/सहचर का काम किया। अन्ततः पेपे को रेमी ने विधिवत रूप से गोद ले लिया। उसी ने फलोरेन्स स्थित अमेरिकी वाणिज्य दूतावास की सौजन्यतापूर्ण सहायता से 1974में रेमी के अन्तिम संस्कार की व्यवस्था की। यह देखकर पेपे को हैरत और हैरानी हुई कि जेन्सन ने इस दत्तक संबंध का लाभ उठाते हुए एक खुले पत्र में यह घोषणा की कि वह (पेपे) 'युवराज' 'चौथे धर्म संरक्षक' के रूप में रेमी का वैधानिक उत्तराधिकारी है। इस पद को प्राप्त करने के लिए पेपे इतना ही करे कि वह 'राजपद पर उच्च्य पुरोहित' जेन्सन हैं।

पेपे के प्रतिरोधों की उपेक्षा कर दी गई। संविदाभंजक बड़े–बड़े चिट्ठों और पत्राचार में उसके नाम का प्रयोग करते रहे, तो उसने एक बहाई संस्था को लिखा कि संविदाभंजकों द्वारा सभी कार्यवाही उसकी अनुमति लिये बगैर की गई है, और बार–बार अनुरोध करने के बावजूद उन्होंने कोई ध्यान नहीं दिया है। गियूसेपे पेपे की मृत्यु संभवतः 1994 में हो गई।

2001 में जेन्सन की मृत्यु के पॉच वर्ष पेपे की मृत्यु के सात वर्ष पश्चात, नील चेज जेन जेन्सन के द्वितीय अंतर्राष्ट्रीय बहाई परिषद का सदस्य था ने दावा किया कि पेपे ने उसे गोद लिया था तथा संरक्षक के रूप में अपना उत्तराधिकारी चुना था। परिषद के बहुमत ने उसके दावे को नकार दिया जिससे और मतभेद तथा मुकदमों में वृद्धि हुईं।

वर्तमान स्थिति

प्रभुधर्म से च्यूत हुए नेताओं में कोई अपने परस्पर विरोधी दावे प्रमाणित नहीं कर पाया, वर्षो तक प्रचुरता से विभाजन का क्रम जारी रहा। अधिकांश ने व्यक्तिगत विशेषताओं से पूर्ण एजण्डे प्रस्तुत किये, जो विभिन्न व्यक्तियों द्वारा परिकल्पित और परस्पर बहुत अधिक असम्बद्ध थे। रेमी आधारित विभिन्न गूढ़ आरोपों और प्रत्यारोपों में उलझे रहे, अधिकांश व्यक्तियों ने उनसे किनारा कर लिया, जिन्होंने आरम्भ में उनको गंभीरता से लिया था और बहाई समुदाय ने उनकी पूरी–पूरी अवहेलना कर दी। आज यह घटनाचक्र अस्सी से अधिक वर्ष पूर्व अब्दुल–बहा के संविदाभंजन वर्णन का एक जीता जागता उदाहरण प्रस्तुत करता है :

अतिक्रामकों की ये हलचलें समुद्र की झाग से अधिक कुछ नहीं है जो उसका एक अविछिन्न स्वरूप ही होता है लेकिन संविदा का सागर तरंगायित होगा और निर्जीव शरीरों को तट पर ला पटकेगा, क्योंकि वह उनको अपने भीतर बनाए नहीं रख सकता।

1996 तक रेमी के अनुसरण में बहुत बिखराव आ गया। चार प्रमुख हस्तियॉ कालकलवित होकर दृश्यपटल से ओझल हो चुकी थी। 1974 में मेसन रेमी, 1977 में रेजीनाज्ड किंग, 1991 में रेमी का मनोनीत उत्तराधिकारी डोनाल्ड हार्वे, और 1996 में लीलैण्ड जेन्सन। लोकापवाद और उपहास के कारण जेन्सन का प्रभाव अमेरिका के मध्य–पश्चिम में एक पंथगत व्यक्ति के रूप में दो–तीन अलग–थलग समूहों तक सीमित होकर रह गया। बी यू पी सी में रह गये सदयों में झगड़ों के कारण फूट हो गई। जोयल मगन्जेला का समूह "प्रमाणित बहाई" ने जुलाई 2007 में एक न्यायालय में बताया कि संयुक्त राज्य में उनके मात्र 40 सदस्य है। कुछ अन्य सदस्य भारत तथा आस्ट्रेलिया में बिखरे हैं। जैक्स शोगमोनियन अलग–थलग पड़ा रहा है।

यथेष्ठरूप से बुद्धिमान स्त्री–पुरूष उस मूढ़ता और महत्वाकांक्षा के निष्ठुर अघःप्रवाह से, आधीशताब्दी के बाद भी, मुक्त न हो पायें जिसने हर आशा और कार्यक्रम को डुबो दिया है जिन्हें उन्होंने कभी संजोया था – यह वस्तुतः एक सचेतक कथा है। जिन व्यक्तियों ने चार्ल्स मेसन रेमी का अनुसरण किया उनकी तकदीर संविदाभंजन के विषाणु का स्वरूप तथा उसकी अशक्तकारी प्रभाव के अध्ययन का विषय है।

पिछले दशक में चार्ल्स मैसन रेमी के शोगी एफेंदी के उत्तराधिकारी होने संबंधी कपोल दावे का समर्थन करने वालों ने अपनी धूमिल हो रही आशाओं को पुनर्जीवित करने के लिये इंटरनेट का सहारा लिया है। अपने सदस्यों के छोटे आकार पर पर्दा डालते हुए यह महत्वहीन समूह बहाउल्लाह के सत्य अनुयायी होने तथा विश्व व्यापी बहाई समुदाय का वैध–विकल्प होने का भ्रम पैदा करने का प्रयास करते हैं। साधारण जनता में रूचि उत्पन्न करने की अपनी क्षमता के अभाव में, रेमी के धर्मच्युत होने के यह अवशेष अभी भी निष्ठावान बहाईयों को अपने भ्रष्ट प्रभाव में लाने के प्रयास की होड़ कर रहे हैं।

बढ़ती आयु के कारण जोयेल मरान्जेला तथा जॅक्स शोगमोनियन ने हाल ही में अपने उत्तराधिकारियों की नियुक्ति की है। इसमें कोई शक नहीं है कि इंटरनेट पर उनके पवित्र लेखों के अचूक व्याख्याता होने के दावों पर हुई उनकी भर्त्सना कि वे पवित्र लेखों को मूल भाषा में पढ़ भी नहीं सकते, इन दोनों ने ईरानियों को अपना उत्तराधिकारी चुना है। धर्म के पालने में रह रहे अनुयायियों ने रेमी के षड़यंत्र की ओर पीठ कर ली, ईरान के बाहर दो ईरानियों ने नेतृत्व के लिये अपने अहं तथा लालसा के वशीभूत, चयनित शाखा शोगी एफी के समकक्ष होने का दावा करने का दुस्साहस कर रहे हैं।

धर्म की संस्थाओं द्वारा उसके विचारों को स्पष्ट करने के लिये किये गये प्रयासों के बावजूद, पर्थ

आस्ट्रेलिया के निवासी नुसरातुल्लाह बहरमंद ने रेमी तथा मरान्जेला के दावों को खुले तौर पर स्वीकार किया और उसे 2003 में संविदा भंजक घोषित कर दिया गया। कुछ वर्षों में मरान्जेला ने उसे धर्मभुजा तथा 2006 में स्वयं द्वारा स्थापित तृतीय अंतर्राष्ट्रीय बहाई परिषद का उपाध्यक्ष घोषित किया। मई 2007 में मरान्जेला ने उसे अपना उत्तराधिकारी घोषित कर दिया।

इनायतुल्लाह (जाबिह) याज्दानी जो सिडनी, आस्ट्रेलिया के समीप रहता है, गुपचुप तरीके से अनेक वर्ष पूर्व मैसन रेमी के प्रति अपनी संबद्धता जताने लगा। उसके कार्यो से दूर रखने के लिये काफी प्रयास किया गया तथा 2004 में उसने अपने लंबे समय के विचार को खुले तौर पर कहना प्रारंभ किया कि रेमी, शोगी एफेंदी का वैध उत्तराधिकारी है। इतना ही नहीं, डोनाल्ड हार्वे को तृतीय संरक्षक तथा जैक्स शोगमोनियन को चौथा संरक्षक भी स्वीकार किया। जुन 2005 में उसे संविदा भंजक घोषित किया गया। शोगमोनियन ने हाल में याज्दानी को अपनी मृत्यु पश्चात पॉचवां संरक्षक नियुक्त किया है।

विश्व न्याय मंदिर
18 फरवरी 2008

इमेल द्वारा
ईरान के मित्र

प्रिय बहाई मित्रों,

हमें ईरान के एक अनुयायी से एक पत्र प्राप्त हुआ है जिसमें संरक्षकत्व तथा विश्व न्याय मंदिर के संबंध में प्रश्न किये गये हैं। संविदा में दृढ़ता उस घरती के अनुयायियों के विशिष्ट लक्षणों में से एक है जिसकी हम प्रशंसा करते हैं। यह अनुयायी धर्म में शक्ति की उत्तराधिकारिता संबंधी नियमों तथा आवश्यक तथ्यों को जानते हैं तथा उनमें से किसी को भी किसी ऐसे विषय का स्पष्टीकरण प्राप्त करने में हिचकिचाना नहीं चाहिये जिसमें उनके प्रश्न हों क्योंकि धर्म के शत्रु शक तथा संशय के बीज बोने में अथक प्रयास कर रहे हैं। प्रिय संरक्षक द्वारा हम सबसे की गई अपील कि हमें सुरक्षा संबंधी मामलों में सदैव सजग रहना चाहिये, के संदर्भ में यह अधिक लाभकारी होगा कि मित्र समय–समय पर संबंधित आवश्यक तथ्यों का पुनरावलोकन करते रहें अतः हमने निम्न टिप्पणियों को देने का निर्णय लिया है। इस संबंध में हम आपको प्रोत्साहित करते हैं कि आप मेसन रेमी तथा उसके अनुयायी संबंधित प्रपत्र का पुनरावलोकन करें जिसको हमारे आदेश पर एक तदर्थ समिति द्वारा तैयार किया गया था। इस प्रपत्र का अनुवाद संलग्न है।

संरकत्व तथा विश्व न्याय मंदिर संबंधी प्रश्नों का उत्तर बहाउल्लाह, अब्दुलबहा तथा शोगी एफेंदी की लेखनी तथा विश्व न्याय मंदिर की व्याख्याओं का ध्यानपूर्वक अध्ययन कर दिया जा सकता है। जो अब्दुलबहा के अनुसार उन समस्त समस्याओं पर विचार करेगा जिन्होंने मतभेद को जन्म दिया है, प्रश्न जो अस्पष्ट हैं तथा वे विषय जिनका किताब–ए–अकदस में स्पष्ट वर्णन नहीं है। अब्दुलबहा मित्रों को आश्वस्त करते हैं कि वे जो भी निर्णय लेंगे उनका पवित्र लेखनी जैसा ही होगा।

1921 में अब्दुलबहा के देहावसान के पूर्व धर्म की सुरक्षा तथा भविष्य में इसके सतत विकास के लिये इच्छापत्र तथा वसीयतनामा में दी गई व्यवस्थायें अज्ञात थीं। अनुयायी उस दिन की आशा कर रहे थे जब विश्व न्याय मंदिर की स्थापना होगी क्योंकि पवित्र लेखों में इसका स्पष्ट उल्लेख था। संरक्षक के होने के संबंध में कोई स्पष्ट समझ नहीं थी। वास्तव में शोगी एफेंदी ने बाद में यह संकेत दिया कि उन्हें भी अपने इस पद की कोई पूर्व सूचना नहीं थी। अधिकतम जो उन्होंने सोचा था वह था, कि अब्दुलबहा के सबसे व्यस्क पौत्र के रूप में उन्हें इच्छापत्र तथा वसीयतनामा में न्याय मंदिर के चुनाव की व्यवस्था की जिम्मेदारी दी जा सकती थी। वसीयतनामा को पढ़ने के पश्चात ही संरक्षकत्व की संस्था के बारे में वृहद जानकारी प्राप्त हुई तथा पूरे विश्व में बहाई समुदाय ने शोगी एफेंदी को धर्म के मुखिया के रूप में मान्यता दी जिसकी ओर सभी को मुख करना था।

अब्दुलबहा के वसीयतनामें का ध्यानपूर्वक अध्ययन यह स्पष्ट करता है कि उन्होंने पूर्वनिश्चित परिणाम को इंगित नहीं किया बल्कि अनेक ऐसी परिस्थितियों के बारे में व्यवस्थायें दीं जिनसे धर्म का सामना भविष्य में हो सकता था। वसीयतनामें का दूसरा भाग जो मात्र विश्व न्याय मंदिर का उल्लेख करता है तथा संरक्षकत्व को इंगित भी नहीं करता, ऐसे समय लिखा गया था जब अब्दुलबहा का जीवन स्पष्ट खतरे में था तथा शोगी एफेंदी छोटे बालक थे। इस समय अब्दुलबहा ने विश्व न्याय मंदिर के तुरंत चुनाव की व्यवस्था की थी, यदि अनेक जीवन को खतरा वास्तविकता में परिणित हो जाये। ईश्वर की दया से संकट टल गया तथा अनेक वर्षों बाद, संरक्षक तथा धर्म के मुखिया के रूप में, विश्व न्याय मंदिर के निर्माण काल की जिम्मेदारी शोगी एफेंदी पर आ पड़ी। प्रारंभ में उन्होंने अब्दुलबहा की मृत्यु के तुरन्त पश्चात विश्व न्याय मन्दिर की संभावना पर विचार किया जब विश्व न्याय मन्दिर तथा संरक्षक साथ–साथ काम करते उन्होंने विर्णय लिया कि पहले प्रशासनिक व्यवस्था की स्थानीय तथा राष्ट्रीय स्तर पर नींव मजबूत करने की आवश्यकता थी। हुआ भी कुछ ऐसा कि विश्व न्याय मन्दिर की स्थापना उनके स्वयं के देहावसान के अनेक वर्षो पश्चात हुई संरक्षकत्व से विश्व न्याय मन्दिर के चुनाव तक का बदलाव इतनी सहजता से होने का श्रेय भी वसीयतनामें में दी गई व्यवस्थाओं को जाता है।

अब्दुलबहा का इच्छापत्र तथा वसीयतनामा स्पष्ट रूप से शोगी एफेंदी का उत्तराधिकारी के रूप में संभावना की अनुमति देता है और इसके प्रकाश में हम संरक्षक के 36 वर्षीय प्रशासन काल में स्वयं के द्वारा तथा उनकी ओर से लिखे गये अनेक कथन पाते हैं जो भविष्य में संरक्षकों से संबंधित हैं, तथापि, लेखों में इस प्रकार का कोई आश्वासन नहीं है कि संरक्षकत्व की परंपरा पूरे धर्म काल के दौरान जारी रहेगी, बल्कि इसके समापन की संभावना व्यक्त की गई है। इस संबंध में बहाउल्लाह किताब–ए–अकदस में कहते हैं :

परोपकार संबंधी कार्यों के लिये समर्पित सम्पत्ति संकेतों को प्रकट करने वाले ईश्वर के अधीन रहेगी। ईश्वरीय प्रकटीकरण के इस उदस्थल की अनुमति के बिना उसका कोई विक्रय नहीं कर सकता। उसके बाद यह अगसानों को प्राप्त होगा, तत्पश्चात न्याय मंदिर को, यदि उस समय तक दुनिया में उसकी स्थापना हो गई रहेगी, ताकि वे इन सम्पत्तियों का उपयोग इस धर्म में महिमामंडित किये गये स्थलों के लाभ के लिये, तथा जो कुछ भी शक्ति और सामर्थ्य के परमेश्वर द्वारा निर्धारित किये गये हैं, उनके लिये करें, अन्यथा ये सम्पत्तियॉ बहा के लोगों के सुपुर्द मानी जायेंगी। वे परमेश्वर की अनुमति बिना नहीं बोलते और ईश्वर द्वारा इस पाती में दिये गये निर्णय के अनुसार ही न्याय करते हैं। अरे, वे तो धरती और स्वर्ग के बीच विजय के महारथी हैं। इन सम्पत्तियों का उपयोग वे उस विधि से करें जिसका उल्लेख शक्तिमान, दयावान ईश्वर द्वारा ग्रंथ में किया गया है।

शोगी एफेंदी के देहावसान से वह परिस्थिति उत्पन्न हो गई जिसकी चर्चा की गई थी जिसके अनुसार अगसानों – पहले अब्दुलबहा तथा बाद में शोगी एफेंदी की सत्ता समाप्त हो चुकी थी – तथा विश्व न्याय मंदिर की स्थापना नहीं हुई थी।

अपने इच्छापत्र तथा वसीयतनामें में, अब्दुलबहा स्पष्ट शब्दों में उन परिस्थितियों का वर्णन करते हैं जिनमें शोगी एफेंदी अपने उत्तराधिकारी का संरक्षक के रूप में चयन कर सकते थे।

हे तुम प्रभु के प्रिय जनों ! यह प्रभुधर्म के संरक्षक के लिये अनिवार्य है कि अपने जीवन काल में ही अपना उत्तराधिकारी नियुक्त करे जिससे उसके स्वर्गवास के बाद विवाद न उठे। जो भी उत्तराधिकारी नियुक्त किया जाये वह समस्त सांसारिक वस्तुओं से अनासक्त हो, उस पावनता का सार–तत्व हो, वह ईश्वर से भय, ज्ञान, बुद्धिमत्ता और विद्वता प्रदर्शित करे। यदि धर्मसंरक्षक की बड़ी संतान अपने में इन शब्दों की सत्यता नहीं प्रकट करे कि "बालक पिता का गुप्त सार है" यानि यदि वह अपने पिता से उसकी (धर्मसंरक्षक) आध्यात्मिकता नहीं प्राप्त करता है और उसका चरित्र उसके गौरवशाली वंश की गरिमा के अनुकूल न हो तो वह (धर्मसंरक्षक) किसी अन्य शाखा को अपना उत्तराधिकारी नियुक्त करे।

धर्मभुजाओं को अपने मध्य से नौ व्यक्तियों को चुनना होगा जो हर समय धर्म संरक्षक के महत्वपूर्ण कार्यों की सेवा में जुड़े रहें। इन नौ व्यक्तियों का चुनाव एकमत या बहुमत से धर्मसंरक्षक द्वारा उनके उत्तराधिकारी की नियुक्ति के प्रति सहमति प्रकट करनी चाहिये। यह स्वीकृति गुप्त मतदान द्वारा दी जानी चाहिये जिससे स्वीकृति एवं अस्वीकृति के स्वर अलग नहीं किये जा सकें।

उपरोक्त कथन के संबंध में, कितने भी विद्वान व्यक्ति के निजी विचारों की तुलना, संरक्षक के उक्त अनुच्छेद के संबंध में भ्रमातीत समझ से नहीं की जा सकती। अपने पूरे प्रशासन काल में शोगी एफेंदी जो बहाउल्लाह तथा अब्दुलबहा की इच्छाओं के प्रति पूर्ण निष्ठावान रहे, अपने उत्तराधिकारी की नियुक्ति के ऐसे प्रश्न के संबंध में असावधान नहीं रह सकते थे जो धर्म की एकता के लिये इतना आवश्यक है। यह कल्पनीय है कि वह किसी ऐसे को नियुक्त देते जो अब्दुलबहा द्वारा निर्धारित आर्हताओं का स्वामी न हो। यह बताना भी अतर्कसंगत होगा कि इसी प्रपत्र से स्पष्ट बताई गई आवश्यकताओं जैसे उनकी पसंद का नौ चुने हुये धर्मभुजाओं द्वारा अनुमोदन ताकि उनके पश्चात मतभेद न उत्पन्न हों, से अलग हटकर वे कुछ कदम उठायेंगे। संविदा भंजकों का यह सुझाव कितना दुराग्रहपूर्ण है कि शोगी एफेंदी मास्टर के आदेशों की अनदेखी कर अपने उत्तराधिकारी की अप्रत्यक्ष व रहस्यमय नियुक्ति करेंगे। शोगी एफेंदी द्वारा उत्तराधिकारी का न चुना जाना इस बात को दर्शाता है कि उन्होंने अब्दुलबहा के इच्छापत्र के प्रत्येक शब्द का सावधानीपूर्वक ध्यान रखा तथा उस निष्कर्ष को चिन्हित करता है कि कोई भी ऐसा व्यक्ति नहीं था जिसकी नियुक्ति की जा सके।

अतः बहाउल्लाह के प्रत्येक दृढ़ अनुयायी को यह स्पष्ट होना चाहिये कि संरक्षकों के क्रम का अंत शोगी एफेंदी के देहावसान के पश्चात धर्म भुजाओं के किसी निर्णय अथवा कार्य का परिणाम नहीं था। इस क्रम का

अंत तब हुआ जब उपस्थित परिस्थितियों तथा वसीयत की सुनिश्चित व्यवस्थाओं से बंधे शोगी एफेंदी ने अपने उत्तराधिकारी को नियुक्त नहीं किया। ऐसी संभावना का विचार भी व्यर्थ है कि भविष्य में उसकी पुर्नस्थापना संभव है। अब्दुलबहा ने लिखा है कि "हजार वर्ष की समाप्ति से पूर्व किसी को एक शब्द उच्चारण का भी अधिकार नहीं है, संरक्षकत्व के पद के संबंध में भी"। इसी अनुच्छेद में वह मित्रों का आह्वान करते हैं कि "यदि विचारों में अनेकता हो तो सर्वोच्च न्याय मंदिर तुरंत समस्याओं को सुलझायेगा।" अपने निर्माण के तुरंत बाद विश्व न्याय मंदिर ने कहा कि "कोई राह नहीं है कि नियुक्त या विधान करा जा सके जिससे शोगी एफेंदी के उत्तराधिकारी के रूप में द्वितीय संरक्षक की नियुक्ति की जा सके।"

संरक्षकों का क्रम समाप्त हो गया है किन्तु संविदा सुरक्षित है। शोगी एफेंदी की तमाम व्याख्यायें विश्व न्याय मंदिर के निर्णयों की जानकारी देती हैं जबकि धर्म सतत अग्रसर है। धर्म की एकता सुरक्षित है तथा मानवता के लिये बहाउल्लाह का महान उद्देश्य निश्चित है।" बहाउल्लाह कहते हैं, "सर्वशक्तिशाली की भुजा ने अपना प्रकटीकरण एक अविजेय स्थायी नींव पर स्थापित किया हैं। मानवीय कलह के तूफान इसके आधार को कमजोर करने में अशक्त हैं और न ही मानवों की कपोल कल्पनायें इसके ढांचे को हानि पहुॅचाने में सफल होंगीं।

प्राप्त पत्रों में उठाये गये स्पष्ट प्रश्नों में से एक प्रश्न लेखनी में उपयोग किये गये शब्द 'अगसान' के अर्थ से संबंधित है। जैसा कि संरक्षक ने स्पष्ट किया है, यह शब्द स्पष्ट रूप से बहाउल्लाह के पुत्रों के लिये प्रयुक्त किया गया है, तथा अनेक बार बहाउल्लाह के पुरूष वंशजों के लिये भी उपयोग किया गया है। उदाहरण के लिये अब्दुलबहा ने अपने वसीयतनामें तथा इच्छापत्र में शोगी एफेंदी को "चयनित शाखा"(गुस्न–ए–मुमताज) बताया है। शोगी एफेंदी को गुशन कहना जो अगसान का एकवचन है, पदवियों को दिये जाने की उस परंपरा को आगे बढ़ाना है जो बहाउल्लाह ने अपने पुत्रों को दिये थे जैसे महानतम शाखा, महान शाखा तथा पवित्रतम शाखा। शोगी एफेंदी की ओर से लिखे एक पत्र में शब्द 'अगसान' को समझाया गया है कि यह बहाउल्लाह के वंशजों को बताता है। दूसरा संरक्षक के भाई हुसैन रब्बानी, मास्टर के पौत्र को अफनान तथा अगसान बताताहै जैसा कि मास्टर के इच्छापत्र तथा वसीयतनामें में बताया गया हैं यह स्पष्ट है कि 'अगसान' तथा 'गुस्न' शोगी एफेंदी तथा बहाउल्लाह के अन्य पुरूष वंशजों को भी सम्मिलित करता है।

यदि किसी समय, बहाउल्लाह के पुरूष वंशज जो संविदा के प्रति वफादार हैं, प्रकट हों तो भी संरक्षक का पद पाना उनमें से किसी के लिये भी संभव नहीं होगा क्योंकि जैसा पहले ही स्पष्ट किया गया है कि शोगी एफेंदी द्वारा नियुक्ति के अभाव में वे संरक्षक होने का दावा नहीं कर सकते तथा विश्व न्याय मंदिर द्वारा उन्हें नामित करने का कोई प्रावधान नहीं है।

एक अन्य प्रश्न विश्व न्याय मंदिर की स्थापना से संबंधित है। स्पष्ट रूप से प्रश्न पूछा गया है कि पवित्र भूमि में 'प्रशासनिक मान्यता प्राप्त' अर्न्तराष्ट्रीय बहाई न्यायालय की स्थापना जिसका शोगी एफेंदी द्वारा जिक्र किया गया था, क्या विश्व न्याय मंदिर की स्थापना में प्रारंभिक कदम नहीं था ?

जैसा कि तुम्हें निश्चित पता है, शोगी एफेंदी ने बताया है कि अब्दुलबहा ने स्वयं अपनी एक पाती में अपने ही जीवनकाल में विश्व न्याय मंदिर की स्थापना की संभावना पर विचार किया था। मास्टर ने उसकी स्थापना के लिये आवश्यक शर्तों का उल्लेख किया है जिसमें धार्मिक न्यायालय की स्थापना सम्मिलित नहीं है।

यूरोप की संसदों के चुनाव के लिये अपनाई गई प्रक्रिया को सर्वोच्च न्याय मंदिर के चुनाव अपनाया जाना चाहिये। जब देशों का मार्गदर्शन हो तो विभिन्न देशों के न्याय मंदिर सर्वोच्च न्याय मंदिर का चुनाव करेंगे।

किसी भी समय प्रत्येक देश में ईश्वर के प्रेमी अपने प्रतिनिधियों का चुनाव करें, और यह प्रतिनिधि अपने प्रतिनिधियों का चुनाव करेंगे, और जब यह प्रतिनिधि एक संस्था का चुनाव करेंगे तब वह संस्था सर्वोच्च न्याय मंदिर कहलायेगी।

उस संस्था की स्थापना विश्व के सभी देशों के परिवर्तन पर आश्रित नहीं है। उदाहरण के लिये यदि परिस्थितियां अनुकूल हों तथा कोई समस्या न हो तो फारस के मित्र अपने प्रतिनिधियों का चुनाव करेंगे, और इसी प्रकार अमेरिका, भारत तथा अन्य क्षेत्र भी अपने प्रतिनिधि का चुनाव करेंगे और यह न्याय मंदिर का चुनाव करेंगे। वह न्याय मंदिर सर्वोच्च न्याय मंदिर होगा। यही अंतिम है।

अपने मंत्रित्व के छत्तीस वर्षों के दौरान, बहाई विश्व का मार्गदश्नन करते हुये, प्रशासन की नींव धरने

का प्रयत्न करते हुये, शोगी एफेंदी ने विकास के स्पष्ट कदमों को बताया जो विश्व न्याय मंदिर की स्थापना में परिणित होंगे। इनमें से कुछ अनुयायियों के प्रयासों पर निर्भर थे – स्थानीय तथा राष्ट्रीय आध्यात्मिक सभाओं में वृद्धि, अंतर्राष्ट्रीय बहाई परिषद की नियुक्ति, तथा इसकी एक निर्वाचित संस्था में परिणति। अन्य कदम, समाज में लागू शक्तियों पर निर्भर थे तथा कुछ कदम पूर्ण नहीं किये जा सकते थे चाहे बहाई समुदाय द्वारा कोई भी प्रयास कर लिया जाये।

1929 में, उदाहरण के लिये, संरक्षक ने बताया "यदि अनुकूल परिस्थितियॉ हों, जिनमें फारस तथा सोवियत शासन के अंतर्गत आने वाले देश अपने राष्ट्रीय प्रतिनिधियों को चुन सकें तो अंतर्राष्ट्रीय न्याय मंदिर की स्थापना में रह गया एकमात्र रोड़ा हट जायेगा।" बाद में रूस से बहाईयों का निष्कासन के पश्चात, संरक्षक की ओर से लिखे एक पत्र में बताया गया "जिस समय उन्होंने रूस का जिक्र किया था, वहां पर बहाई थे, अब वहां समुदाय अस्तित्वहीन हो गया है, अतः अंतर्राष्ट्रीय न्याय मंदिर की स्थापना रूसी राष्ट्रीय आध्यात्मिक सभा पर निर्भर नहीं रह सकती।

इसी प्रकार बहाई न्यायालयों की स्थापना, कुछ एशियाई देशों में राष्ट्रीय न्यायालयों की स्थापना आदि के लिये भी शोगी एफेंदी ने कुछ लक्ष्य निर्धारित किये थे जो अंतर्राष्ट्रीय बहाई परिषद के विकास के कदम थे जो पवित्र भूमि में न्यायालय, विश्व न्याय मंदिर का पूर्ववर्ती न्यायालय था। मिस्त्र सरकार द्वारा राष्ट्रीय आध यात्मिक सभा को स्वतंत्र बहाई न्यायालय के रूप में मान्यता की मांग बहुत पहले वर्ष 1929 में की गई थी। समय के साथ बदली परिस्थितियों ने इस प्रकार धार्मिक न्यायालयों की स्थापना असंभव कर दी। 1959 में धर्मभुजाओं ने अंतर्राष्ट्रीय बहाई परिषद के चुनाव तथा अंत में विश्व न्याय मंदिर की स्थापना के संबंध में कहा :

हम अनुयायियों को आश्वस्त करना चाहते हैं कि इस चुनाव की निर्धारित तिथि से पूर्व पवित्र भूमि में बहाई न्यायालय की स्थापना के लिये पूर्ण प्रयास किया जायेगा। तथापि हमें यह ध्यान रखना होगा कि संरक्षक ने स्वयं इस लक्ष्य की ओर स्पष्ट रूप से इंगित किया था, कि धार्मिक न्यायालयों की स्थापना धर्मनिरपेक्षता की ओर हो रहे झुकाव के कारण विश्व के इस भाग में प्राप्त नहीं भी हो सकती है।

एक और उठाया गया प्रश्न संरक्षक द्वारा पूर्व में किये जा रहे कुछ कार्यों का विश्व न्याय मंदिर द्वारा संपादन से संबंधित है। ईश्वराधिकार के संबंध में, अब्दुलबहा ने कहा है कि "इसका नियंत्रण, पूर्णतया अथवा आंशिक, की आज्ञा है परंतु इसकी आज्ञा धर्म के प्राधिकारी द्वारा दी जानी चाहिये जिसकी ओर सभी को मुख करना है।" इसी प्रकार, संविदा भंजकों का निष्कासन भी ऐसी अनिवार्यता है जो धर्म प्रमुख द्वारा निभायी जाती है धर्म की एकता को संकट में डालने वाले लोगों से बचाने के अपने उत्तरदायित्व के रूप में यह सर्वविदित है कि शोगी एफेंदी संविदा भंजकों को अपने पूरे मंत्रित्वकाल में, धर्म भुजाओं की नियुक्ति से पूर्व तथा बाद में, निस्कासित करने को विवश हुये थे। यह उत्तरदायित्व अब विश्व न्याय मंदिर पर आ पड़ा है, धर्म के केन्द्र के रूप में, जिसकी ओर सभी को मुडना है। इस कार्य के लिये आवश्यक वर्तमान कार्याविधि को "सलाहकारों की संस्था" पुस्तिका में स्पष्ट किया गया है।

इस संबंध में यह भी ध्यान देने योग्य है कि शोगी एफेंदी की मृत्यु के पश्चात दुःख से भरे बहाई विश्व ने संरक्षक के मंत्रित्वकाल तथा विश्व न्याय मंदिर के चुनाव के मध्य के विरल काल में अपनी एकता को बनाये रखा। इसकी एकता को एकमात्र चुनौती संरक्षक की मृत्यु के दो वर्ष पश्चात मिली जब उस समय के एक ध ार्मभुजा मेसन रेमी ने संरक्षकत्व का दावा किया। जैसा तुम जानते हो, रेमी ने दावा किया कि 1951 में नवजात अंतराष्ट्रीय बहाई परिषद के अध्यक्ष के रूप में उनकी नियुक्ति का अर्थ है कि उन्हें स्वतः ही विश्व न्याय मंदिर के प्रमुख का पद प्राप्त हो जायेगा और इस प्रकार वे द्वितीय संरक्षक हो जाते हैं।

रेमी के दावे की विसंगति स्पष्ट है तथा इसे कम व्याख्या की आवश्यकता है। 1957 में, वह उन ध ार्मभुजाओं में सम्मिलित थे जो शोगी एफें के असमय निधन के पश्चात पवित्र भूमि में अगले कदम पर विचार करने के लिये एकत्र हुये थे। उन्होंने स्वयं सहमति दी थी कि शोगी एफेंदी ने कोई उत्तराधिकारी नियुक्त नहीं किया था, उस दस्तावेज पर हस्ताक्षर किये थे जो इस संबंध में धर्मभुजाओं ने एकमत से जारी किया था। इसी प्रकार के एक अन्य दस्तावेज पर हस्ताक्षर कर उन्होंने अपनी सहमति दी कि धर्म भुजाओं की पूरी संस्था निर्णय लेगी कि कब व किस प्रकार अंतराष्ट्रीय बहाई परिषद विश्व न्याय मंदिर के चुनाव में फली भूत होगी दो वर्ष तक पवित्र भूमि में सेवा के लिये चयनित नौ धर्म भुजाओं में से एक सदस्य के रूप में उन्होंने बहाई समुदाय के विकास के

लिये किये जा रहे विचार विमर्शो में भाग लिया। तब बगैर किसी सूचना अथवा अपने साथी धर्म भुजाओं के साथ विचार विमर्श के उन्होंने संरक्षक के पद पर दावेदारी प्रस्तुत की जिसकों शोगी अफैन्दी द्वारा स्पष्ट नियुक्ति का अभाव था जैसा कि अब्दुलबहा के वसीयतनामें व इच्छापत्र में स्पष्ट दिया गया था। तथा अब्दुलबहा की उस आज्ञा का भी उल्लघंन था कि कोई भी इस प्रकार का दावा नहीं करेगा। अब्दुलबहा की वसीयत में दिये गये अधिकारी का उपयोग करते हुये धर्म भुजाओं ने संविदाभंजक के रूप में उसे धर्म से निस्कृषित कर दिया।

संविदा से संबधित विषयों में मित्रों को दृढ़ तथा अटल रहना चाहिये। उन्हें सतर्क रहना होगा कि कही शंका के बीज बोने वाले संशय की स्थिति न उत्पन्न कर दे अथवा अनेकता तथा विवाद की ओर ले जायें। यदि ऐसे प्रश्न उठें जिनको हल नहीं किया जा सकता तो उन्हें तुरंत विश्व न्याय मंदिर के सम्मुख लाया जाना चाहिये। मित्रों को मुख्यतया सतर्क रहना होगा ताकि संविदा भंजकों तथा उनके अनुयायियों के अवशेषों की कानाफूसी के उस आकर्षण से बच सकें जो अनुयायियों के विश्वास को डिगाना चाहता है। जहॉ पूर्व में संविदा के उल्लंघनकर्ताओं ने बहाउल्लाह, अब्दुलबहा तथा शोगी एफेंदी के अधिकार को कम करने का प्रयास किया, आज वही चुनौती वे विश्व न्याय मंदिर को दे रहे हैं। जैसा कि अब्दुलबहा ने सचेत किया था, उन लोगों से अधिक चिंता है जो "संविदा में अपनी दृढ़ता तथा अटलता दर्शाते हैं किन्तु रूचिपूर्ण कान पाते ही गुप्त रूप से शंका के बीज बो देते हैं।"

रेमी के मुट्ठी भर साथी, आधी सदी के अपने झगड़ों के पश्चात धर्म के विकास पर नगण्य प्रभाव डाल पाये हैं। उनके कार्यों की हलचल धर्म रूपी वृक्ष की प्राणहीन पत्तियों को हिला पाती हैं। वे जो भोले–भाले हैं, शिक्षाओं से जिनका दृढ़ीकरण नहीं हुआ है, संविदा में दृढ़ नहीं हैं, जो अपने अभिमान तथा नेतृत्व की लालसा से नियंत्रित होते हैं, को मार्गविमुख कर पथहीन किया जा सकता हैं। पवित्र लेखों में बार–बार दिये गये स्पष्ट प्रबोधनों को दृढ़ता से लागू कर स्वयं व अपने समुदाय की संरक्षा की अपील है जैसा कि अब्दुलबहा ने कहा हैः

सभी को महानतम पवित्र पुस्तक की ओर मुड़ना चाहिये और जो कुछ भी स्पष्ट नहीं दिया गया है, निश्चित ही विश्व न्याय मंदिर को भेजा जाना चहिये। यह संस्था बहुमत अथवा एकमत से निर्णय लेगी, वही सत्य है तथा स्वयं ईश्वर का उद्देश्य हैं। जो कोई भी इससे विलग होता है, उनमें से है जो कलह पसंद करते हैं, बैर प्रदर्शित करता है तथा संविदा के स्वामी से दूर हो गया है। इस मंदिर का अर्थ है विश्व न्याय मंदिर जो पश्चिम और पूर्व के उन सभी देशों से निर्वाचित होगा जिनमें बहा के प्रियजन निवास करते हैं। यह चुनाव प्रक्रिया वैसे ही सम्पन्न होगी जिस प्रकार पश्चिमी देशों जैसे इंग्लैड में निर्वाचन की रीति है।

और अब प्रभुधर्म का एक सर्वाधिक महान तथा मौलिक सिद्धांत है, संविदा भंजकों का पूर्णतया बहिष्कार करना और उनकी संगति का भी परित्याग करना क्योंकि वे प्रभुधर्म का नाश कर देंगे, उसके विधानों को आमूल उखाड़ फेकेंगे। अतीत में किये गये कार्यों का कोई प्रतिदान नहीं मिलेगा। हे मित्रों, तुम्हारा कर्तव्य है कि संवेदनशील हृदय से परम पावन, परम उदात्त के कष्टों पर विचार करो और सदा उस आशीर्वादित सौन्दर्य के प्रति निष्ठा प्रकट करो। प्रचुर प्रयत्न किये जाने चाहिये ताकि ये सभी आपदायें, कष्ट और विपत्तियॉ और ईश्वर की राह में पानी की तरह बहाया गया शुद्ध तथा पवित्र रक्त व्यर्थ न चला जाये...

हे तुम परमेशवर के प्रियजनों, अपने पूरे दिलो जान से प्रभुधर्म को कपटियों के आक्रमण से बचाने का प्रयास करो क्योंकि ऐसी आत्मायें सीधे को टेढ़ा बनाने एवं सभी परोपकारी कार्यों के विपरीत परिणाम उत्पन्न करने को बाध्य करती हैं।

धर्म के पालने में रह रहे निवासी जो एक सदी से भी अधिक समय से शासन तथा धर्मगुरूओं के कष्टों का सामना कर चुके हैं, जो अजल तथा मुहम्मद अली के विद्रोहों से उत्पन्न खतरों पर विजय पा चुके हैं, उनसे स्वयं को दूर कर चुके हैं जिन्होंने शोगी एफेंदी का विरोध किया, सहजता से उन कुछ लोगों के मिथ्या तथा बेतुके तर्कों को नकार देंगे जो रेमी के अलगाव का बहाना बनाकर कुछ मुट्ठी भर अनुयायियों को आकर्षित करना चाहते हैं। उस पवित्र भूमि में निवास कर रहे सभी प्रिय मित्रों की ओर से पवित्र देहरी पर हमारी प्रार्थनाओं के प्रति आश्वस्त रहें।

पवित्र बहाई शुभकामनाओं के साथ,

विश्व न्याय मंदिर

`